491 वाँ सफलतम अंक

प्रतियोगिता दर्पण
हिन्दी मासिक

वर्ष 41
द्वादश अंक
जुलाई 2019

इस अंक में...

12 निराशा और आशा
14 राष्ट्रीय घटनाक्रम
23 मोदी लहर के चलते 17वीं लोक सभा में एनडीए को भारी बहुमत
28 अन्तर्राष्ट्रीय घटनाक्रम
32 आर्थिक-वाणिज्यिक परिदृश्य
40 नवीनतम सामान्य ज्ञान
45 खेलकूद
47 मुम्बई इंडियंस रिकॉर्ड चौथी बार आईपीएल की विजेता
50 युवा प्रतिभाएं

फोकस

57 (1) भारतीय कृषि और कृषक को संकट से उबारने की चुनौती
59 (2) इक्कीसवीं शताब्दी के भारत निर्माण हेतु 9 मिशन
62 (3) विद्यालयी शिक्षा में रूपान्तरणीय परिवर्तन
66 विश्व परिदृश्य
71 स्मरणीय तथ्य
73 वर्तमान में चर्चित विभिन्न अवधारणाएं
76 भारत के प्रमुख ऐतिहासिक व्यक्तित्व
79 आर्थिक लेख—भारत में समावेशी विकास तथा वित्तीय समावेशन : एक मूल्यांकन
82 प्रगति लेख—विज्ञान और आर्थिक विकास
85 सामयिक लेख—भारत में लोकतंत्र मॉडल की प्रासंगिकता
89 अन्तरिक्ष विज्ञान लेख—एण्टी-सैटेलाइट मिसाइल-भारत की अन्तरिक्षीय परिसम्पत्तियों का रक्षक
91 अन्तर्राष्ट्रीय लेख—इस्लामिक सहयोग संगठन में भारत की मौजूदगी के निहितार्थ
93 विधि लेख—क्या कानून के क्षेत्र में हिन्दी की कोई उपयोगिता है ?
96 ऐतिहासिक लेख—प्राचीन भारत में बौद्ध धर्म को राजकीय संरक्षण
98 पर्यावरण लेख—पर्यावरण और जलवायु परिवर्तन
100 कृषि लेख—मृदा प्रदूषण के नियंत्रण में सूक्ष्मजीवों की उपयोगिता
103 सार संग्रह

वस्तुनिष्ठ सामान्य ज्ञान

107 सिविल सर्विसेज प्रारम्भिक परीक्षा, 2019
119 उत्तर प्रदेश समीक्षा अधिकारी/सहायक समीक्षा अधिकारी (मुख्य) परीक्षा, 2018
127 केन्द्रीय विद्यालय संगठन स्नातकोत्तर शिक्षक परीक्षा, 2018
132 एस.एस.सी. संयुक्त स्नातक स्तर (प्रथम चरण) परीक्षा, 2017
139 समसामयिक वस्तुनिष्ठ प्रश्न
141 उद्योग, व्यापार एवं बैंकिंग सचेतता
143 ऐच्छिक विषय : शारीरिक शिक्षा—यू.जी.सी.-नेट/जे.आर.एफ. परीक्षा, 2018

विविध/सामान्य

154 कोयला क्षेत्र में अनुसंधान एवं विकास के बढ़ते चरण : एक दृष्टि में
156 तर्कशक्ति—आई.बी.पी.एस. बैंक स्पेशलिस्ट ऑफीसर (मुख्य) परीक्षा, 2018
161 संख्यात्मक अभियोग्यता—केनरा बैंक पी.ओ. परीक्षा, 2018
168 क्या आप जानते हैं ?
169 अपना ज्ञान बढ़ाइए
170 प्रथम पुरस्कृत निबन्ध—भारत की विदेश नीति के बदलते आयाम
172 प्रथम पुरस्कृत समीक्षा—महँगी चुनाव प्रणाली भ्रष्टाचार को जन्म देती है
173 निबन्ध प्रतियोगिता क्रमांक-480 का परिणाम
174 रोजगार समाचार
175 English Language–IBPS Probationary Officers (Pre.) Exam., 2018

प्रतियोगिता दर्पण में प्रकाशित किसी भी सामग्री अथवा चित्र के लिए सम्पादक की सहमति होना आवश्यक नहीं है. –सम्पादक

• E-mail : publisher@pdgroup.in • Website : www.pdgroup.in

निराशा और आशा

—साध्वी वैभवश्री 'आत्मा'

A pessimist sees difficulty in every opportunity.
An optimist sees the opportunity in every difficulty.

– Winston Churchil

जब-जब इंसान निराशा की गर्त में गिर जाता है और उसे ऐसा लगता है कि अब उसका अच्छा कुछ हो ही नहीं सकता, क्योंकि लगातार इतना बूढ़ा होता जा रहा है कि अच्छे होने की उम्मीद ही समाप्त हो चुकी है. उस निराशा के गर्त में डूबे हुए आदमी को अगर कोई व्यक्ति अच्छी बात कहे उसके लिए आशापरक, आशाजनक एक सपना उसके सामने रखें कि उस पर विश्वास करेगा, बहुत मुश्किल है वो नहीं कर पाएगा विश्वास उसे ऐसा लगेगा कि तुम्हें क्या पता मेरा दर्द क्या है ? तुम्हें कैसा लग सकता है कि मैं क्या महसूस कर रहा हूँ ? और जो बुरे दिन मैं जी रहा हूँ वो बुरे दिन भगवान किसी को न दे, लेकिन मैं जानता हूँ कि ये सारे बुरे दिन मुझे भोगने ही पड़ेंगे और ये जो तुम अच्छी बातें कर रहे हो न ये तुम इसलिए कर रहे हो कि तुम्हारा पेट भरा है, इसलिए कर रहे हो कि तुम्हें सुख मिले हैं, इसलिए कर रहे हो कि तुम किस्मत वाले हो और तुम मेरे सामने ऐसी बातें मत करो, क्योंकि ये सब बातें सत्य नहीं हो सकतीं हैं. निराशा के गर्त में डूबे हुए आदमी को हर आशा की बात में भी निराशा दिखलाई पड़ती है. उसे आशाजनक वक्तव्य पर कोई विश्वास नहीं होता और यही कारण है कि वह अपनी निराशा में और अधिक गहन से गहन डूबता चला जाता है. कभी-कभी कोई आशा की किरण उसके भीतर जरा सा प्रेम और विश्वास जगा भी देती है और फिर जैसे ही वो उस उम्मीद के सहारे आगे बढ़ता है तो उसका मन बहुत सारी अपेक्षाएं पालना शुरू कर देता है. एक छोटीसी उम्मीद पूरी होने पर आदमी के जीवन में आदमी के मन में इतनी सारी आशाएं जगा जाती हैं कि उसे लगता है कि अब सब पूरी हो जाएंगी, लेकिन फिर जब वो चलते हुए गिर जाता है, ठोकर खाता है, चोट मिलती है, पुनः और गहरे अविश्वास के साथ निराशा में डूबता चला जाता है और फिर उसे लगता है कि जो उसने बातें की थीं वह सब झूठी थीं, उम्मीदें सत्य नहीं हैं, ऐसा व्यक्ति सबको नकारना शुरू कर देता है. यही नकारात्मकता ही नरक है, दुःख है. इस नरक, इस दुःख, इस तनाव को हम अपने अनुभवों से ही निर्मित करते हैं, दुःखद अनुभवों से निर्मित करते हैं और फिर ये दुःखद अनुभव, दुःखद अनुभवों को ही पालते जाते हैं, बढ़ाते चले जाते हैं, दुःख, दुःख को बढ़ाता जाता है और आदमी दुःखों से बाहर निकल ही नहीं पाता है. इस प्रक्रिया का अन्त कहाँ, इस प्रक्रिया का अन्त कैसे हो सकता है, कि हम दुःखों से मुक्त हो सकें, कि हम अपनी निराशाओं से बाहर आ सकें.